आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received:26/09/2023; Accepted:21/10/2023; Published:26/12/2023

शशिप्रभा शास्त्री कृत 'परसों के बाद ' उपन्यास में प्रतिभा निर्यात की समस्या

- **डॉ. कविता वि चांदगुडे**
सह प्राध्यापिका
किटेल कला महाविध्यालय

डॉ. कविता वि चांदगुडे, **शशिप्रभा शास्त्री कृत 'परसों के बाद ' उपन्यास में प्रतिभा निर्यात की समस्या**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023,(459-463)

शशिप्रभा शास्त्री नारीवादी चिंतन को अपने कथा साहित्य में विशेषत: प्रस्तुत करती रही हैं। अपनी कहानियों और उपन्यासों में बड़ी विस्तार से नारी जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन करती हुई बड़ी बारीकी से नारी जीवन की समस्या और संघर्ष का चित्रण किया है।नारी की अस्मिता के प्रश्न को बार बार प्रस्तुत करती रही है। नारी जीवन के अतिरिक्त अन्य विषयों को लेकर भी लिखती रही है।नगरीय मध्यवर्ग का चित्रण करती हुई उससे जुड़ी अनेक समस्याओं को उजागर किया है।नारी के समान ही पुरुष के मानसिकता का निरीक्षण करती हुई उसका विवेचन भी अपने साहित्य में किया है।शशिप्रभा जी एक साम्यवादी मानवतावादी लेखिका है जो समसामयिक जीवन का पटाक्षेप अपने साहित्य के माध्यम से करती रही हैं।

परसों के बाद इस उपन्यास में शशिप्रभा जि ने एक नई समस्या को प्रस्तुत किया है।आजकल युवा पीढ़ी का विदेश पलायन आम बात बनती जा रही है। विदेश की चकाचौंध से हमारा युवा वर्ग इतना अधिक आकृष्ट क्यों है? यह विचारणीय है।शशिप्रभा जी ने इस विषय को बड़ी गंभीरता से देखा है और उसके पीछे निहित कटु सत्य का बोध कराया है।हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था भी जाति धर्म भाषा राजनीति आदि के शिकंजे में फंसी हुई है। अतः बौद्धिक शोषण निरंतर चल रहा है।शिक्षा व्यवस्था में निहित असंग अंखियों से छात्र।शोषण का शिकार बन रहे हैं।योग्य छात्रों को उनकी अर्हता पर प्रवेश मिलता नहीं है।योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति, हॉस्टल आदि उपलब्ध नहीं हो रहे हैं।शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार से छात्र त्रस्त होकर।अपने सपनों को साकार करने के लिए विदेशों की ओर उन्मुख हो रहे हैं।विदेश जाने वाले अनेक मेधावी, इंजीनियर डॉक्टर आदि की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है।विदेशों में शिक्षा व्यवस्था की नियमितता और प्रतिभा का आदर को देखते हुए।युवा वर्ग वही स्थाई रूप से बचने का निर्णय कर रहा है। शशि प्रभा जी ने शिक्षा व्यवस्था की सी विषाद पूर्ण स्थिति पर प्रकाश डालती हुई भविष्य में इसके परिणाम के प्रति आतंक व्यक्त करती हैं।हमारी शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने का आग्रह कर रही है।

शंकर एक मेधावी छात्र था। हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी से एमएससी में। प्रथम श्रेणी प्रथम स्थान प्राप्त कर पीएचडी करने दिल्ली आया था।हमारे विश्वविद्यालयों शोध संस्थानों।मैं व्याप्त भ्रष्ट संस्था के कारण उसे दो साल तक पीएच.डी. में दाखिला भी नहीं मिला।बड़ी मुश्किल से उसे वहां पर जूनियर रिसर्च ऑफिसर के रूप में कार्य करता रहा।बेटी मुन्नू और पत्नी माधुरी के साथ वह दिल्ली में बसा।उसके माता पिता चंद्रा जी और विक्रम जी रामपुर में रहते थे।पोती मुन्नू की प्रथम वर्षगांठ के लिए बड़े उत्साह से वे दिल्ली पहुंचे। महानगरीय जीवन की व्यवस्था के कारण बेटे और बहू ने एक दिन पहले ही बच्ची का जन्मदिन मना चुके थे।वे दोनों अपने काम पर चले गए तो बुजुर्ग माता-पिताआहत हुए।आधुनिक जीवन की विडंबना है कि अर्थ के पीछे दौड़ते हुए हम अपने परिवार जनों के लिए समय जुटा नहीं पा रहे हैं।

शंकर को शोध संस्थान में कई कटु कटु अनुभव होते रहे।जिसका परिणाम उसके पारिवारिक जीवन पर भी होता रहा।वह बेटी के बर्थडे जैसी छोटी-छोटी खुशियों को भी मना नहीं पाता है।वह अपने माता पिता से अपने संस्थागत राजनीति षड्यंत्र का वर्णन करता है तो वे भी व्यथित होते हैं।शंकर उन्हें बताता है कि किस तरह से बौद्धिक शोषण हो रहा है।शोधार्थियों के शोध आलेखों को उनके उच्च अधिकारी अपने नाम से प्रकाशित कर रहे हैं।छात्रों को शिक्षा पूर्ति करने, उनके कार्य क्षमता को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति में भी षड्यंत्र किया जा रहा है।छात्रवृत्ति को छात्रों के योग्यता पर निर्धारित ना करते हुए अधिकारी वर्ग अपने स्वार्थ संपादन के लिए उसका उपयोग कर रहे हैं।यहां भ्रष्टाचार का तांडव चलते हुए सुविधा प्राप्त संपन्न छात्रों को ही छात्रवृत्ति उपलब्ध किया जा रहा है। इसके परिणाम से छात्र वर्ग में आक्रोश उत्पन्न होता है। एडमिशन से लेकर रिसर्च तक प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार फैली हुई है। कई छात्र इन हालातों से हार मानकर विदेश जाते हैं।शंकर आदर्शवादी होने के कारण इन स्थितियों में भी यहीं रहकर देश सेवा करने का निर्णय लेता है।उनके अधिकारी शोधार्थियों के जायज मांगों को पूरा करने का आश्वासन भले ही देते रहें किंतु कभी अमल में नहीं लाते। छात्रों के जोर देने पर उनके शिष्टता का बहाना करते हुए उन्हें संस्थान से निकाल देते हैं।इसकी प्रतिक्रिया में युवा वैज्ञानिकों का एसोसिएशन इसका विरोध करते हुए हड़ताल करता है। कई महीनों तक मामला न सुलझने पर शंकर के कई साथी विदेश जाने का निर्णय लेते हैं।किंतु शंकर फिर भी देश से बाहर जाने की बात नहीं सोचता। शंकर की बुद्धिमत्ता और प्रतिभा की तारीफ करते हुए

उसके प्रोफेसर उसके हौसले को बढ़ाते रहे। पर जब पदोन्नति की बात आई तो शंकर को जूनियर रिसर्च ऑफिसर से आगे बढ़ाया ही नहीं जाता, इससे वह निराश हो जाता है। जब उसके जूनियर सिफारिश का सहारा लेकर प्रमोशन पाते हैं तो शंकर की व्यथा बढ जाती है।

शंकर दिन रात मेहनत करता है, पर वह एक सामान्य परिवार का सदस्य होने के कारण और किसी सिफारिश का सहारा न होने पर उसके काबिलियत का तिरस्कार ही किया जाता है। भारतीय समाज का प्रत्येक क्षेत्र जाति धर्म संप्रदाय परंपराओं के बंधनों से जकड़ा हुआ है कि इन के सम्मुख मेधावी योग्य व्यक्ति का भी कोई मूल्य नहीं है। शिक्षा क्षेत्र भी इससे कुछ अलग नहीं है।विख्यात विश्वविद्यालयों में भी गंदी राजनीति का खेल षड्यंत्र उत्साही मेधावी शक्तियों को कुंठित कर रहा है। इसी का परिणाम है कि कुछ आदर्शवादी प्रतिभान्वित

युवा इनके चंगुल से बचने पलायन कर रहे हैं। इन्हीं स्थितियों का शिकार बना शंकर आदर्श को त्याग कर प्रैक्टिकल बनता है।अपने साथियों के समान उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने का निर्णय लेता है।

शंकर के निर्णय से उसके माता-पिता थोड़े से विचलित एवं चकित रह जाते हैं। जब उच्च शिक्षा के लिए वे स्वयं शंकर को विदेश भेजना चाहते थे तो शंकर अपने आदर्शों को व्यक्त करते हुए देश सेवा को अहमियत दिया था। शंकर के लॉस एंजलिस चले जाने परपोती मुन्नू की जिम्मेदारी चंद्रा जी को लेनी पड़ी।माधवी हॉस्टल में रहते हुए आप अपना काम करने लगती हैं।नन्ही सी बच्ची को अपने माता-पिता से दूर रहना अनिवार्य हो जाता है।पोती के देखभाल में चंद्रा जी का मन रम जाता है।शंकर के विदेश जाने के निर्णय की चर्चा करते हुए माधवी से पूछती हैं।माधवी चंद्रा जी को बताती है कि विदेश जाने के विचार पहले भी नहीं थे और बाद में भी नहीं हुई है। यह विचार तो परिस्थितियों ने पैदा किए हैं।दरअसल संस्थाओं की अराजकता के कारण ही देश के डॉक्टर व वैज्ञानिक विदेशों के लिएउद्यत हो रहे हैं।शंकर की बेबसी को जानकर चंदा जी को दुख होता है।चंदा जी को ढलती उम्र में छोटी बच्ची को संभालना कभी कबार कठिन भी होता है।किंतु नटखट मन्नू के खेलों में अपना दर्द भूल जाती है।बच्ची से बिछुड़ने के दिनों को याद करती हुए आतंकित रहती है।

केवल तीन साल के लिए विदेश गया शंकर वहां के वातावरण से प्रभावित होता है।प्रतिभा एवं परिश्रम का सम्मान कार्य करने का अनुकूल वातावरण काम के बदले उचित प्रतिफल इन स्थितियों से वह संतृप्ति का अनुभव करता है।उसकी तलाश मानो समाप्त हो जाती हैं। देश की स्थितियों में कोई बदलाव नहीं। कर्म क्षेत्र में असंतुष्ट इन काम करने की स्वतंत्रता का अभाव भविष्य की अनिश्चितता। न्यायोचित प्रति फलों का अभाव निरंतर तनाव दबाव घुटन इन से घबराकर स्थाई रूप से वापस न लौटने का निर्णय करता है।वह मां से अपने इस निर्णय के पीछे की का वर्णन करता है ।"पर विश्वास कीजिए, आपका बेटा निजी भौतिक सुविधाओं के लिए इधर नहीं रहना चाहता। पर अब आप ही विचार कीजिए। जिस देश में काम करने तक की सुविधाएं ना दी जा रही हो तो हम अज्ञान जो हम अज्ञानी को के लिए पहली शर्त है तब तो उस हालत में वहां जीना और रहना ही मुश्किल होगा।" शंकर के इन शब्दों ने हमारे देश की व्यवस्था की खोखलेपन को उजागर कर देती हैं।

पोती और बहू को विदा देती चंद्रा जी सोचती है कि कुछ दिन पहले इसी तरह एक महान वैज्ञानिक के मस्तिष्कवाला उनका बेटा देश से बाहर गया था।आज की तारीख में भी उसी की तरह के दूसरे कई उर्वर मस्तिष्क इसी जहाज पर सवार होंगे। ये मस्तिष्क अपने देश से भी ना जाने किस देश की पथरीली मिट्टी में फूल खिलाएंगे, उसे जगमग आएंगे। अपने पीछे यह भी एक इतना ढेर अंधकार छोड़ जाते हैं।शिक्षित युवाओं की भौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षण ही नहीं बल्किभारतीय परिवेश में व्याप्त निराशा मनुष्य तथा असंतृप्ती का परिणाम देश से पलायन है। प्रत्येक स्वाभिमानी युवा देश प्रेमी होता हुआ भी मजबूरन देश से बाहर जा रहा है है।इस क्षति को देश को ही भुगतना होगा।

शशिप्रभा जी, इससे उत्पन्न पारिवारिक समस्या पर भी प्रकाश डालती है।शंकर सुखी परिवार के बावजूद दफ्तर के अशांत में वातावरण से दुखी था।शंकर विदेश जाने का निर्णय लेता है तो माधवी उसके तनाव भरी स्थिति को समझकर कुछ समय के लिए पति एवं बेटी के वियोग सहने को तैयार हो जाती है। नौकरी के कारण खुद हॉस्टल में रहती है। मुन्ना को चंदा जी के साथ भेजती है।शशिप्रभा जी ने नौकरी करने वाले दंपतियों के

संतानों की मानसिक स्थिति का चित्रण किया है। तीन वर्षीय मुन्नू को पिता के विदेश गमन एवं मां की नौकरी के कारण जबरन माता-पिता से बिछुड़ना पड़ता है। नन्ही बच्ची होते हुए भी इस हालाद से समझौता करती है। महानगरों की यही विडंबना है कि यहां बच्चे समय से पहले बड़े हो जाते हैं।माधवी को बस में बिठाकर चंद्राची घर लौटी तो मुन्नू पूछती है कि आप मम्मी को छोड़ आई।इससे चंद्रा जी को राहत मिलती है।चंद्राची बच्ची बन कर उसके खेलकूद में शामिल होती हैं। दादा दादी के साथ कश्मीर यात्रा करना, चाचा चाची और बहन के स्नेह को पाकर अपने माता-पिता को बिल्कुल भूलने वाली मुन्नू पिता का संदेश पाते ही माता-पिता से जुड़ने खुशी से चलती है।किंतु चंद्रा जी के लिए पोती से बिछड़ना असहनीय होता है।साथ ही हमेशा के लिए अपने बेटे बहू और पोती से बिछड़ने का गम सताता है।इन शब्दों में शशि प्रभा जी ने बड़ी गंभीर समस्या का उद्घाटन किया है।बुद्धिजीवियों का इसी तरह पलायन करने से आज और कल किसी तरह से देश की गाड़ी चलेगी, किंतु परसों उसकी क्या स्थिति होगी इसलिए हमारी संस्थागत असंग अंखियों पर गंभीरता से सोचना अनिवार्य है।शिक्षा देश की दूरी है, उसको सबल सशक्त बनाना अति आवश्यक है।

देश की प्रतिभा को देश में ही पढ़ते पढ़ते विकसित करने एवं उसका सही उपयोग करने की अनिवार्यता है। अतः हमारी राजनीतिक सामाजिक मान्यताओं में बदलाव की आवश्यकता है। यही शशि प्रभा जी का मंतव्य है।उपन्यास का शीर्षक परसों के बाद यह अर्थ निहित है कि यदि देश के बौद्धिक प्रतिभाओं का परिस्थिति वश विवश होकर इसी प्रकार पलायन जारी रहा तो आज और कल तो देश की गाड़ी किसी तरह चल जाएगी। लेकिन बाद में आने वाले परसों तक उसकी क्या स्थिति होगी। यह चिंतनीय है।नई पीढ़ी में विदेशी आकर्षण बढ़ता जा रहा है। पाश्चात्य जीवन शैली, सुख सुविधाओं का आकर्षण भारतीय युवा मानस को देश से पलायन करने उकसा रहे हैं। सर्वोपरि देश की स्थितियां, भ्रष्टाचार, अराजकता, अवसरों का अभाव, सम्मान का अभाव आदि बुद्धिजीवियों को देश से विमुख होने विवश कर रहे हैं। फलतत: शैक्षिक एवं वैज्ञानिक विकास में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। शशिप्रभा जी इस समस्या की गंभीरता से भलीभांति परिचित हैं। अतः शशिप्रभा शास्त्री ने प्रस्तुत उपन्यास में पारिवारिक समस्या के रूप में विद्यमान स्थिति की गंभीरता तक पहुंचते हुए भविष्य में देशव्यापी स्वरूप को पाते हुए अनुभव करती हैं। साथ ही इसमें अस्तित्व की तलाश, पारिवारिक संबंधों में बढ़ती शीतलता, मानवीय संबंधों की शिथिलता, शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त अव्यवस्था, भ्रष्टाचार आदि पहलों पर भी विचार करने को मजबूर करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. शशि प्रभा शास्त्री, परसों के बाद, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985

2. डॉ रुक्मिणी देवी, डॉ शशिप्रभा शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, विश्व भारती पब्लिकेशंस नई दिल्ली, 2007

3. डॉ कल्पना मानिकचंद व्हसाले -अनवले, नवम दशक के उपन्यास: इ संवेदना और शिल्प, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 2004

4. डॉ वंदना सोपन राव मोहिते, आठवें तथा नवें दशक के सां उपन्यासों में नारी, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 2007

****